

○ Year : 2 ○ Issue : 7 ○ March 2018 ○ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

**(An International Refereed Quarterly
Research Journal)**

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

Special Note :

Anti national thoughts are not acceptable.

Patron :

Prof. M.M. Agrawal

*(Former Dean, Arts Faculty & H.O.D. Sanskrit,
University of Delhi, Delhi)*

Prof. D.S. Chauhan

*(Former H.O.D. Sanskrit, Magadh University,
Bodhgaya, Bihar)*

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा
एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं
डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4 ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।

सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान

Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907

प्रकाशनार्थ सूचना

- * लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 या क्रुतिदेव फॉन्ट में वर्ड या पेजमेकर में टाइप (टङ्कण) कराकर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
- * शोध-लेख हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में न्यूनतम 1500 शब्द एवं अधिकतम 5000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम के साथ स्वयं की फोटो (छवि-चित्र) अत्यन्त अनिवार्य है।
- * प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
- * लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
- * 'ग्लोबल शॉट' किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
- * यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की सहमति होना आवश्यक नहीं है। अतः लेख के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
- * शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
- * अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
- * कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।
- * पत्रिका का वितरण निःशुल्क किया जाता है एवं विशेष अनुदान के लिए किसी पर कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रकाशन के लिए कोई भी आवश्यक शुल्क नहीं है।
- * प्रत्येक लेख हमारी विशेषज्ञ समीक्षा समिति के द्वारा त्रिस्तरीय स्तर पर समीक्षित होकर प्रकाशित हेतु स्वीकृत किया जाता है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित : रूपेश कुमार चौहान

ISSN : 2456-0898

विशेष सूचना : शोध पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिए गये तथ्यों और इनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद का पूर्ण दायित्व लेखक का होगा, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक एवं पत्रिका से सम्बन्धित अन्य किसी भी व्यक्ति का नहीं। प्रेषित स्पष्टीकरण अवश्य प्रकाशित किया जायेगा।

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- 'ग्लोबल शॉट' से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट 'वाक् सुधा' के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

Registered Office : H.No. 47, A-3 Block, Gali No. 5,
Near Sankat Mochan Mandir, Dharampura Extn., Najafgarh, Delhi-110043
Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907

Advisory Board

- **Prof. Arvind Kumar Pandey**
(Former V.C., Kameshwar Singh Sanskrit University, Darbhanga)
- **Mahamahopadhyaya Prof. Ved Prakash Shastri**
(Former P.V.C., Gurukul Kangarhi University, Haridwar)
- **Prof. Shankar Dayal Dwivedi**
(Department of Sanskrit, Allahabad University)
- **Prof. Ram Sarekh Singh**
(Former H.O.D., Philosophy, Magadh University, Bodhgaya)
- **Prof. Mahmood Manshur Alam**
(Head, Urdu Department Magadh University, Bodhgaya)
- **Prof. Ram Bharat Singh**
(Former H.O.D., Political Science, Magadh University, Bodhgaya)

- **Prof. Hirapaul Gangnegi**
(Former H.O.D., Department of Buddhist Studies, University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Sohanpal Sumankshar**
(National President, Bhartiya Dalit Sahitya Academy)
- **Dr. Vikramaditya Roy**
(Head, Sociology, D.A.V. P.G. College (BHU) Varanasi)
- **Prof. Satyadev Poddar**
(History Department, Tripura Central University, Tripura)
- **Prof. Kashinath Jena**
(Department of Political Science, Tripura Central University, Tripura)
- **Dr. Krishna Kumar Jha**
(Senior Lecturer, Department of Hindi, Mahatma Gandhi Institute, Moka, Mauritius)

Editor (Hindi)

Dr. Rupesh Kumar Chauhan

Assistant Professor, Sanskrit Department,

ZHDC (Even.), Delhi University

E-mail : rupesh.nirmal26@gmail.com

Mob. : 9555222747, 9540468787

Sub-Editor (Hindi)

Dr. Rajesh Kumar

Assistant Professor, Sanskrit Department

PGDAV College, Delhi University

E-mail : rajeshmm108@gmail.com

Mob. : 9555666907, 9891526584

Office Addresses :

Head Office (Delhi) :

Dharam Pal

I-11, Usha Kiran Building, Commercial Complex,

*Azadpur, **Delhi-110033***

Mob : 9266319639

Branch Office (International) :

• Dr. Usha Tiwari

*Bharatpur-4, Narayan Ghat, Chitwan, **Nepal***

• Mrs Kirthee Devi Ramjatton

Impasse Bois Cheri, Bois Cheri Road,

Moka- 80804 Mauritius

Email: kdramjatton@yahoo.com

Contact no.: +230 57882178

Graphic Designing

Kawal Malik

J.D. Computers Mob. : 9818455819

Editorial Board

- **Dr. Gajender Singh**
(Associate Professor, African Studies Department, University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Jay Prakash Narayan**
(Associate Professor, Sanskrit Department, Jamiya Miliya Islamiya University, Delhi)
- **Dr. V.K. Tomar**
(Associate Professor, Commerce Department, Agrasen College, University of Delhi)
- **Dr. Sharad Ranjan**
(Associate Professor, Economics Department, Zakir Hussain Delhi College (Even.), University of Delhi)
- **Dr. Manoj Kumar Sinha**
(Assistant Professor, Commerce Department, PGDAV College (Morning), Delhi)
- **Dr. Anil Kumar**
(Assistant Professor, Economics Department, Shyamlal College (Even.), University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Anupam Jha**
(Assistant Professor, Faculty of Law, University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Pankaj Chaudhary**
(Assistant Professor, Faculty of Law, University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Krishna Kumar Jha**
(Senior Lecturer, Hindi Department, Mahatma Gandhi Institute, Moka, Mauritius)
- **Dr. Govind Kumar Jha**
(Assistant Professor, University Department of Mathematics, Vinoba Bhave University, Hazaribagh)
- **Dr. Uma Shankar**
(Assistant Professor, Sanskrit (Jyotish) Department, University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Manoj Sharma**
(Assistant Professor, History Department, Kirorimal College, University of Delhi, Delhi)
- **Mrs. Kirthee Devi Ramjatton**
(Lecturer, Department of Sanskrit, School of Indological Studies, Mahatma Gandhi Institute Moka, Mauritius)
- **Dr. Vandana Kumari Singh**
(Assistant Professor, Department of Zoology, Hansraj College, University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Sunil Kumar Singh**
(Assistant Professor, Chemistry, Kirorimal College, University of Delhi, Delhi)
- **Dr. Sushil M. Tiwari**
(Assistant Professor, Botany Department, Hansraj College, University of Delhi, Delhi)

अनुक्रमणिका

Editorial -----	8	दलित साहित्य का धार्मिक-दर्शन	65
भारत में नौकरशाही का विकास.....	9	डॉ. अश्वनी कुमार	
कुमार प्रशांत		Rural Road Connectivity in India: A bold policy initiative towards improving the quality of life -----	70
रघुवीर सहाय की कविता में अभिव्यक्त राजनीतिक चेतना	12	Dr. Pooja Paswan	
डॉ. प्रमोद कुमार द्विवेदी		Honour Killings : A Study in the Culture of Inhumanity -----	80
मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चेतना	16	Dr. Pratibha	
डॉ. सुनीता खुराना		हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में नागरी प्रचारिणी पत्रिका का योगदान (आरंभिक पाँच वर्षों के संदर्भ में)	86
The Impact of Music on the positivity and well being of mankind -----	19	डॉ. प्रमोद कुमार द्विवेदी	
Dr. Neeta Mathur		नरेश मेहता की काव्यदृष्टि और दूसरा सप्तक... 90	
युद्ध की विभीषिका और अपरिहार्यता के मध्य कवि दिनकर	21	डॉ. चित्रा सिंह	
डॉ. अनिल राय		Sustainable Development of India: Challenges and the way forward -----	98
पुष्टिमार्गीय पद-गान में रस एवं भावाभिव्यक्ति	26	Kumar Prashant	
डॉ. नीता माथुर		प्रेमचंद के साहित्य में औद्योगिकीकरण	102
Al-Shahrestani's Perception of Hindu Religious Systems -----	28	डॉ. कविता राजन	
Dr. Manisha S. Agnihotri		Tribal Identity And Movements In Santhal Pargana Region -----	109
अलंकार शास्त्र का ऐतिहासिक विकास	33	Kumari Khusboo	
डॉ. शंकर नाथ तिवारी		त्यागपत्र और उसके अज्ञेय कृत अनुवाद का तुलनात्मक अध्ययन	113
भारतीय पारम्परिक कलाएँ और वर्तमान स्त्री-स्वावलम्बन	40	डॉ. विकेश कुमार मीना	
डॉ. अनिल राय		संपादक, विचारक और समालोचक के रूप में प्रेमचंद	121
Redefining the identity of Untouchables through the vision of Dr. B.R. Ambedkar ----	45	डॉ. रत्नेश कुमार सिंह	
Ruchika Singh		बाल-पत्रकारिता का ऐतिहासिक संदर्भ	131
नेताजी : एक स्वाधीन आत्मा	48	डॉ. सरोज कुमारी	
डॉ. मीना शर्मा		हिन्दी कहानियों में विकलांगजनों के जीवन की छवियाँ	135
वाल्मीकि रामायण में छलित योग	51	डॉ. सुमित्रा महरोल	
डॉ. अनीता शर्मा		संस्कार व्यवस्था : व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण की विलक्षण योजना	140
Impact of Globalisation on Women in India -----	56	डॉ. सरस्वती	
Dr. Vandana Tripathi / Mrs. Geetanjali Kumar			
नाज़ी जर्मनी और महिला प्रश्न :			
इतिहास पलटने का प्रयास	61		
डॉ. मृदुला झा			

कल्पना का रचनात्मक पक्ष	145
डॉ. अनिल कुमार सिंह	
हिन्दी साहित्य में महिला लेखन की स्थापित छवि को तोड़ता शक्तिशाली उपन्यास-‘महाभोज’	149
डॉ. रिम्मी खिल्लन	
दलित साहित्य की पृष्ठभूमि और अंतर्विरोध	152
डॉ. पद्मा राम परिहार	
आधुनिक रचनाशीलता में लोक-चेतना (संदर्भ : अँधेर नगरी, गोदान और मैला आँचल).....	157
डॉ. रामेश्वर राय	
सुशीला टाकभौरे की साहित्यिक दृष्टि	162
डॉ. सुमित्रा महरोल	
स्वयं प्रकाश की कहानियों में घर	166
रचना सिंह	
छायावाद के सौ साल-एक दृष्टि	171
डॉ. संगीता राय	
पद्मावत में व्यक्त स्त्री-धर्म और जेंडर की अवधारणा	176
रीनू गुप्ता	
दलित विमर्श का संदर्भ और ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ	180
डॉ. सुनीता सक्सेना	
महाभारत में चित्रित कर्ण का आदर्श व्यक्तित्व	184
डॉ. धनपति कश्यप	
भारतेन्दुयुग : अंतर्जातीय संपर्क एवं सांस्कृतिक अस्मिता	189
डॉ. भास्कर लाल कर्ण	
भूमंडलीकरण और सूचना क्रांति का समाज पर प्रभाव : विविध पक्ष और नयी चुनौतियाँ	196
डॉ. रिम्मी खिल्लन सिंह	
भारतीय लोक-जीवन और अमीर खुसरो का काव्य	199
डॉ. संगीता राय	
हिन्दी पत्रकारिता में बदलाव : बदलते समाज का आईना	205
डॉ. सीमा रानी	
भारतीय राष्ट्रवाद का विकास	214
डॉ. कैलाश नारायण तिवारी	
वैश्वीकरण : प्रकृति और विशेषताएँ	218
डॉ. अबिता कुमारी	
संस्कृत व्याकरण तथा भाषा-दर्शन के क्षेत्र में मिथिला का योगदान	223
डॉ. रणजीत कुमार मिश्र	

The Predicament of Women as Subaltern in Roots and Shadows -----	227
<i>Dr. Seema Naz</i>	
सिंधु घाटी सभ्यता का नगर विन्यास	231
डॉ. एम.एम. रहमान	
Challenges of Self-reliance in India -----	234
<i>Dr. Sumit Prasher</i>	
‘आषाढ़ का एक दिन’ नाटक की नाट्यानुभूति	238
डॉ. नंदकिशोर	
प्रमाणमञ्जरी में मोक्ष विचार	242
डॉ. दिलीप कुमार झा	
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में अभिव्यक्त राजनीतिक चेतना में बदलाव	246
डॉ. देव कुमार	
अम्बेडकर और राष्ट्रवाद : समकालीन प्रासंगिकता	252
डॉ. सुषमा गुप्ता	
‘अपने-अपने पिंजरे’ में चित्रित दलित संघर्ष	256
डॉ. चन्द्रशेखर राम	
‘गबन’ में चित्रित मध्यवर्गीय स्त्री	259
डॉ. राम किशोर यादव / डॉ. चन्द्रशेखर राम	
The Master of Hegelian Dialectics -----	263
<i>Dr. C. V. Babu</i>	
बाष्पा साहिजा जमाजाठनार नवदिगुल : विश्व ७ भावनाय 269	
ड. अनिर्वाण साहू	
ब्राह्मण संस्कृति के अंतर्विरोध : ‘सद्गति’ कहानी ..	275
डॉ. लालजी	
सलतनत कालीन शासन व्यवस्था	280
डॉ. चन्दन कुमार सिंह	
हिंदी के आधुनिक नाटककारों में मोहन राकेश का स्थान	284
डॉ. पुष्कर सिंह	
कुटज : उत्कट जिजीविषा का अजस्र स्रोत	289
डॉ. सुशील कुमार राय	
कफन : मानवीय त्रासदी का आईना	292
डॉ. सत्येन्द्र प्रताप सिंह	
कविता के अलक्षित पाठक की तलाश	296
डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव	
हिंदी रंगमंच : अनूदित प्रयोग	300
डॉ. सीमा जैन	
Inclusive physical education program implementation in India for sustainable developmental goals -----	307
<i>Pramod C. Sharma</i>	
पर्यावरण संधारण और जैन धर्म	310
डॉ. मंजु जैन	
Assessment of a Local Anganwadi Centre in New Delhi -----	313
<i>Dr. Charru Sharma</i>	



सम्पादकीय

सं पूर्ण मानवता को भारतीय अध्यात्म और वेदांत दर्शन का संदेश देने वाले अनंत ऊर्जा और ज्ञान के स्वामी विवेकानन्द जी के अद्भुत व्यक्तित्व से हम सभी परिचित हैं। ग्लोबल थॉट मार्च 2018 अंक में विवेकानन्द जी का ही पुण्य स्मरण करना चाहता हूँ। इसलिए कवर पेज पर उनकी दिव्य तस्वीर है और इस संपादकीय में दो तीन मुख्य बातों की तरफ आप सबका ध्यान आकृष्ट करना चाहता है। 12 जनवरी 1863 कोलकाता के दत्त परिवार उनका जन्म हुआ था। उनके जन्म दिवस 12 जनवरी को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है और यह मनाने की शुरुआत 1984 से प्रारंभ हुई थी पर विधिवत रूप से 1985 से यह दिवस मनाया जाता है। गौरतलब है कि 1985 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'अंतरराष्ट्रीय युवा वर्ष' घोषित किया था। पूरे देश के विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानन्द के जीवन विचारों और दर्शन के बारे जानने को लेकर प्रोत्साहित किया जा सके इसलिए यह दिवस बड़े ही श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। हर वर्ष इसके लिए एक थीम भी निर्धारित किया जाता है उसी क्रम में 2018 की थीम है—'संकल्प से सिद्ध।

सोमवार 22 सितम्बर 1893 धर्म संसद के प्रथम अधिवेशन में उनका भाषण हुआ। जिसमें उन्होंने अमेरिकियों को संबोधित करते हुए कहा—“बहनों और भाइयों! हिन्दू धर्म सभी धर्मों का जनक है। यह वह धर्म है जिसने संसार को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ पढ़ाया। अपनी बात को पुष्ट करने के लिए उन्होंने भगवत गीता के अध्याय चार के श्लोक 11 का उल्लेख किया। जिसमें भगवान श्री कृष्ण कहते हैं—हे अर्जुन! जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥”

उस ऐतिहासिक भाषण में स्वामी जी ने सिद्ध कर दिया कि धर्म में साम्प्रदायिक, संकीर्णता धर्मान्धता इत्यादि के लिए कोई जगह नहीं है। अमेरिका वाले स्वामी जी से बड़े प्रभावित हुए उन्हें हार्वर्ड विश्वविद्यालय में तथा कोलम्बिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद का कार्यभार देने का प्रस्ताव मिला, परन्तु उन्होंने यह कहकर उन पदों को अस्वीकार कर दिया कि वे संन्यासी हैं। स्वामी विवेकानन्द अद्वैतवादी थे। उनके जीवन दर्शन पर उनके गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस, शंकराचार्य के अद्वैतवाद और स्टुअर्ट मिल की पुस्तक यत्सेज ऑन रेलीजन इत्यादि का व्यापक प्रभाव रहा। जिसकी चर्चा विस्तृत रूप से फिर कभी करेंगे। स्वामी जी ऐसा मानते थे कि समस्त मानव जाति का सभी धर्मों का चरम लक्ष्य एक ही है और वह है भगवान से पुनर्मिलन। एक लक्ष्य होते हुए भी लोगों के विभिन्न स्वभावों के कारण भगवान से पुनर्मिलन के साधन अलग-अलग हो सकते हैं। लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के साधनों इन दोनों को मिलाकर 'योग' कहा जाता है। स्वामी जी कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग और ज्ञानयोग पर विस्तृत रूप से बात करते हैं। जिसको आज के इस वैज्ञानिक युग में फिर से पढ़ने और आत्मसात करने की जरूरत है।

अंत में निवेदन है आपके सुन्दर शोधपत्र की हमेशा प्रतीक्षा रहती है। आप अपना प्रेम स्नेह बनाएं रखें।

— डॉ. रूपेश कुमार चौहान

education. They ensure the emancipation of the entire community by educating rural women and children.

Report on the Anganwadi

Organizational set up a Anganwadi

1. Number of room-one
2. Windows-One
3. Washroom- One
4. Name of the Anganwadi worker- Bhapai
5. Age of the Anganwadi worker- 31 years
6. Name of the Anganwadi Helper: Radha
7. Age of the Anganwadi Helper- 54 years

Information about children associated with this Anganwadi Centre

1. Total Number of children- 64
2. Children present- 6
3. Children absent- 58

Anganwadi Timings: 9am -2pm

Timings for children at Anganwadi Centre: 10am-12 noon.

Schedule of the Anganwadi Centre-

9 to 10 am- Cleaning of the Anganwadi Centre

10 am to 12 noon- Non formal education for children

12 noon to 2 pm- Anganwadi worker does record keeping.

Infrastructure

This Anganwadi center is in much better condition than the other centers. There is large playing area for children. There is one room in this Anganwadi center, which is not appropriate space according to the total strength of children. The Anganwadi centre has enough open space and it can be utilized to build a large room for children. There were more space, but only one room is there for the 64 children which is too small as compared to the total strength of children. The room is not well-maintained and there are not enough benches, chairs, and charts and play materials, enough utensils for serving food and water to children. There is only one window in the room. The light thing system

in this room is not well and there is only one light in the room. The effect of the lack of proper infrastructure was reflected by the poor attendance of children of 3 to 6 years at the Anganwadi center.

Equipments in this Anganwadi center

There is a lack of many equipments which are required at the center. There is a lack of proper medical kit and first aid box facility. There is no proper setting arrangement for children like benches and chairs. Children are made to sit on carpet. In the room, there is no blackboard. There were only few toys which is very less as compared to total strength of children at the Anganwadi center. Few charts were pasted on the walls to familiarize children with number, animals, etc. There is also lack of utensils like plates, mugs, bowls, spoons, etc. The Anganwadi center center has only one pitcher which stores drinking water for all children and for the Anganwadi center staff. The centre also has one weighing scale.

Hygiene conditions

The center was kept neat and clean with frequent sweeping and mopping in between the activities. The helpers of a Anganwadi center were found to be sweeping the floor to keep it clean and organized. Children were encouraged to keep the things in proper order after they had used them.

Before and after meals, children would wash their hands with soap or hand wash. It was observed that the children had got into the habit of washing their hands before food time as they were enthusiastically participating in this activity. Children were told to stay clean, and to observe good practices, like taking bath every day, cut their nails, comb their hair, brush their teeth, and wear clean clothes.

The food at the Anganwadi center was covered and placed in a clean area. The workers clean the glasses and plates before use. The center and its surroundings were swept daily. There is a garbage bin with a cover, which was placed at one of the corner at the centre. The toilets are cleaned regularly and there is proper facility of water taps in the toilet to ensure hygiene.

Indoor and outdoor play area

The outdoor play provides opportunities for key learning experiences as well as physical exercise for children. It was found that wherever possible, there was an attempt of achieving a balance between indoor and outdoor activities. If the Anganwadi center has outdoor space different outdoor activities like musical chairs (with bricks instead of chairs), circle games, palm printing on the wall, and other turn taking games were organized.

The Anganwadi worker gave the opportunity to children to decide for themselves what activities they wanted to participate in. When there was a shortage of materials, children were instructed in a manner where, sharing and cooperation was encouraged. The Anganwadi center was interested in informing children about local and general knowledge like name of the local people who help us like bus driver, milkman, etc and also provide information about the country.

Activities were organized in a child friendly manner. Children enjoy the most during rhymes sessions, they knew the rhymes, and sang along, did the actions and followed the Anganwadi worker. The Anganwadi worker sang all the rhymes with actions and children enjoyed imitating those actions. Outdoor activities are also very engaging for the children.

Food quality

The children sat individually on different floor mats during lunch time at the Anganwadi center. The routine was set to wash hands before and after the breakfast and lunch time. Children would sit on the mat and wait for the plates and food to be served to them. Although all children did not follow the instructions of waiting for the prayer, the Anganwadi worker persisted in her instructions. Usually they would serve dal (lentils) and vegetable curry to children. Food was freshly cooked and served hot. The utensils were clean and plenty for each child to have his/ her own.

After lunch, children washed their hands and went home. It was also noticed that the ready to eat food was also very popular with the village community and women came to take packets for beneficiaries like pregnant women and nursing mothers. The fact that

the product was desirable needs to be noted here.

Non formal Education

As children have a short span of attention, a number of activities should be planned, and there should be smooth transition from one activity to the other. It was found that the activities in all the Anganwadi centers were interesting and age-appropriate like free drawing and painting session, filling pebbles in the shapes drawn on the floor, hand painting on the walls and clay modeling among several others. Although each Anganwadi center has a mixed age group of children ranging from 3 to 6 years, the activities performed were simple and informative, and yet the activities were approached in a manner whereby children were engaged and challenged to participate in a comfortable manner.

While the activities were generating joy, they were also enhancing learning, and providing hands-on experience to the children. The activities were child centric and some activities were spontaneously organized and children would enjoy to play with each other in the center. Similarly, the balance between individual, collaborative and cooperative activities was also observed. Sometimes, the activities guided by the teacher were collective where all children were guided to do the same action for instance act like the rowing of a boat in a circle.

Supplementary nutrition

The supplementary nutrition is one of the six services provided under the Integrated Child Development Services (ICDS) scheme, which is primarily designed to bridge the gap between the Recommended Dietary Allowance, & the Average Daily Intake. Supplementary nutrition is given to the children (six months to six years) and pregnant and lactating mothers under the ICDS scheme.

The provision of supplementary nutrition in Anganwadi center

1. Children in the age group of six months to three years: Food supplement of 500 calories of energy and 12 to 15 gm of protein per child per day as

take home ration in the form of micro nutrient fortified food and energy dense food marked as food supplement.

2. Children in the age group of 3 to 6 years: Food supplement or 500 calories of energy and 12 to 15 gm of protein per child per day. Since a child of this age group is not capable of consuming a meal or 500 calories in one sitting, the guidelines prescribed includes the provision of morning snack in the form of milk/ banana /seasonal fruits, etc. and a hot cooked meal.

Positive aspects of this Anganwadi center

1. Adopting activity based environment, embedded Montessori curriculum: The play based learning approach augments the cognitive development of children. It is a approach that combines an effective supplementary nutrition programme with pedagogical processes that makes learning interesting.
2. Well-maintained Rooms : In the Anganwadi center, the rooms are well decorated with charts. All these charts in the center were knowledgeable to the children and parents.

Aspects worth looking into

1. Lack of education and training: Most Anganwadi workers are not well educated, and their skills are limited. They find it easier to keep track of children's growth by wing them rather than falling other measurements tools and techniques.
2. Lack of basic facilities: It is a challenge that the Anganwadi centers do not have basic facilities like drinking water facilitie. Some of the Anganwadis, it is observed do not have even have toilets, basic medicines, etc.
3. Insufficient learning environment: Anganwadic enters do not seem to provide the environment that encourage parents to leave children at the center. Only some Anganwadi centres have facilities, like good quality recreational and

learning facilities for preschool education.

Summary

Anganwadi center plays an important role in the development of a child and also as a precursor to formal education. More importantly, it fosters a learning environment and encourages children to enroll in primary schools. The importance of primary education cannot be over emphasized. Once a child opts out of primary school, later integration into the education system is very difficult in the country. It also becomes difficult to improve the socioeconomic status of the child if the child does not go for formal education.

It is suggested that surprise checks and punitive action against defaulters be implemented. Surprise checks must be carried out every month, so that the Anganwadi centers realize that at any point of time there might be an inspection and they are always performing effectively.

The center also monitors the nutrition levels of the children. The mothers are taught the importance of feeding children seasonal, healthy and nutritious food. The children and the mothers are also given nutrition, supplements, like vitamins, iron, and folic acid. The case of severe malnutrition level has dramatically decreased in communities where Anganwadi centers have been functioning.

ICDS is one of the very successful schemes running in our country and it's effectiveness is due to the Anganwadi centers spread across the country. There is scope to improve the Anganwadi centers and have more enrolment of children and more provisions can be provided to the local communities, including pregnant women, lactating mothers and adolescent girls.

Ph.D. Psychology
Associate Professor
Human Development & Childhood Studies
Bhagini Nivedita College
University of Delhi